International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.9 Issue.4 Mar-Apr- 2022

उच्च शिक्षा में अभिनव तकनीक की उपयोगिता

कु. आकृति खरे[१] डॉ. एस.बी. विश्वकर्मा [२]

[१]सहा. प्राध्यापक भूगोल शास. पी. जी. महा. गढ़ाकोटा सागर (म.प्र.)
Email- akriti.hsg107@gmail.com
[२]सहा. प्राध्यापक भूगोल शास. पी. जी. महा. गढ़ाकोटा सागर (म.प्र.)
drsunilbabu11@gmail.com

सार:-वर्तमान परिदृश्य में मानव जीवन का शायद ही कोई पक्ष या क्षेत्र हो, जो तकनीक के हस्तक्षेप से वंचित हो, शिक्षा का क्षेत्र भी इसके प्रभाव से मुक्त नहीं रह सका है। शिक्षा के प्रत्येक स्तर व पक्ष को तकनीकी विकास ने प्रभावित किया है, फिर भी इस दौर में उच्च शिक्षा विभाग ने विभिन्न प्रयासों के द्वारा शिक्षा कार्यक्रमों को चलाने का भरपूर प्रयास किया, ऑनलाइन क्लासेस से संबंधित वीडियो तथा टेस्ट के माध्यम से विद्यार्थियों को पढ़ाने का पूरा प्रयास किया, शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन कक्षाएं ली गई, कोर्स को कम किया गया, ओपन बुक प्रणाली द्वारा परीक्षा ली गई। कोरोना संक्रमण के इस दौर में शिक्षकों के साथ विद्यार्थियों के जीवन में बहुत परिवर्तन आया है, चॉक एण्ड डस्टर की जगह मोबाइल और लेपटॉप उपयोग होने लगे, ऑनलाइन कक्षाएं, मीटिंग्स, लिंक, माइक्रोसॉफ्ट मीटिंग्स, वेबेक्स, जूम, गूगल मीट, एडोबी , पीपीटी अरेंज करना, सोशल मीडिया आदि ग्रुप से शिक्षक व विद्यार्थी न केवल परिचित हुए बल्कि इनका भरपूर उपयोग भी किया, जो एक तरह से ऑनलाइन शिक्षण के क्षेत्र में पहला कदम था, विद्यार्थियों ने भी शिक्षा के क्षेत्र में इस नई तकनीक का भरपूर उपयोग किया, ऑनलाइन कक्षाएं अटैंड की, वीडियों देखी जिससे उनकी जानकारी के क्षेत्र में भी विस्तार हुआ। इस शोध पत्र के माध्यम से उच्च शिक्षा में अभिनव तकनीक की उपयोगिता का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द - तकनीकी विकास, उच्च शिक्षा, अभिनव तकनीक, ओपन बुक प्रणाली, सोशल मीडिया

अध्ययन का उद्देश्य -

- इस शोध पत्र के अध्ययन का उद्देश्य यह है कि वर्तमान परिदृश्य में उच्च शिक्षा में अभिनव तकनीक का प्रयोग कितना प्रभावी या कारगर है।
- कोरोना संक्रमण ने उच्च शिक्षा केंद्रो के स्वरुप को बदल दिया और इस नई शिक्षण पद्धति को लेकर विद्यार्थियों तथा शिक्षकों में कितनी रुचि है यह जानने का प्रयास किया गया है।

परिकल्पना:-

- प्रस्तुत शोध पत्र उच्च शिक्षा में अभिनव तकनीक की उपयोगिता का आंकलन करता है।
- शिक्षण प्रणाली की नई- नई पद्धतियों के बारे में जानने का प्रयास किया है जिससे विद्यार्थी तथा शिक्षक ज्यादा से ज्यादा नई पद्धति का लाभ ले सकें।

विधि तंत्रः-

- प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए द्वितीयक ऑकड़ो का प्रयोग किया गया है जो विभिन्न समाचार, पत्र-पत्रिकाओं, इंटरनेट तथा वेबसाइट के माध्यम से प्राप्त किए गए है।
- अभिनव तकनीक के उपयोगिता के संबंध में सर्वेक्षण कराकर प्राथमिक समंको को आधार बनाकर विश्लेषण किया गया है।

ऑनलाइन शिक्षण पद्धति पर आधारित सर्वेक्षण रिपोर्ट -

ऑनलाइन शिक्षण पद्धति को लेकर एक प्रश्नावली तैयार की और ऑनलाइन सर्वे कराया गया, जिसमें ६४ विद्यार्थियों ने भाग लिया और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की । इन विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर सर्वे रिपोर्ट तैयार की गई।

1. वर्तमान में ऑनलाइन कक्षाएं उच्च शिक्षा में प्रभावी हैं।

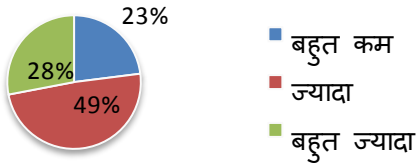

2. ऑनलाइन कक्षा द्वारा विद्यार्थियों के समय और पैसे की बचत होती हैं।

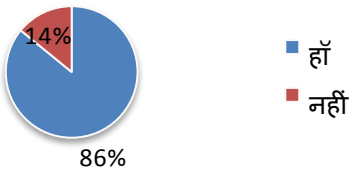

3. ऑनलाइन पढ़ाई में शिक्षक का विद्यार्थियों से सीधा संवाद होता हैं।

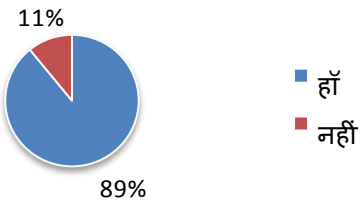

4. ऑनलाइन पढ़ाई में इंटरनेट कनेक्टिविटी एक समस्या है।

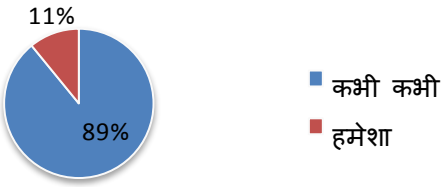

5. उच्च शिक्षा में आप किस तरह की कक्षाएं पसंद करते हैं।

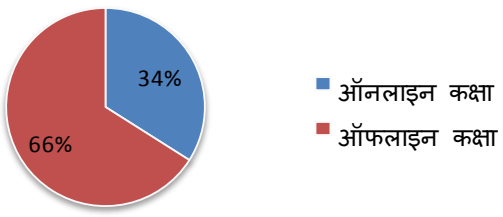

इस रिपोर्ट के अनुसार लगभग ४८ प्रतिशत विद्यार्थियों ने माना कि ऑनलाइन कक्षाएं उच्च शिक्षा में ज्यादा प्रभावी है, वहीं २८ प्रतिशत विद्यार्थियों ने बहुत ज्यादा प्रभावी तथा २३ प्रतिशत ने बहुत कम प्रभावी है। लगभग ८६ प्रतिशत विद्यार्थियों ने माना कि ऑनलाइन कक्षाओं द्वारा समय तथा पैसे की बचत होती है जबकि १४ प्रतिशत ने माना कि समय व पैसे की बचत नहीं होती है, लगभग ८९प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि ऑनलाइन कक्षाओं में शिक्षक का विद्यार्थियों से सीधा संवाद होता है और इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या कभी-कभी होती है जबकि ११ प्रतिशत विद्यार्थियों ने माना कि इन कक्षाओं में विद्यार्थियों से सीधा संवाद नहीं होता और इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या हमेशा होती है। लगभग ६६ प्रतिशत विद्यार्थी ऑनलाइन तथा ३४ प्रतिशत विद्यार्थी ऑफलाइन कक्षाओं को पसंद कर रहे है। लगभग ९६.९ प्रतिशत विद्यार्थियों ने यह माना कि इस महामारी के दौर में ऑनलाइन कक्षाएं बहुत अच्छागमाध्यम है और ९३.८ प्रतिशत विद्यार्थियों को गूगल मीट एप पसंद आया।

अंततः इस सर्वे के द्वारा हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षण पद्धति पसंद आ रही है और कोरोना संक्रमण के इस दौर में उच्च शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए यह सबसे अच्छा माध्यम है।

ऑनलाइन शिक्षण पद्धति के लाभ :-

१. ई-शिक्षा की सबसे बड़ी बात है इसमें समय और जगह की पाबंदी नहीं है। छात्र किसी भी समय या जगह पर अपने सहूलियत के हिसाब से शैक्षिक कार्य कर सकते है।
२. ई-शिक्षा के माध्यम से पढ़ाई करना किफायती है, इसमें पुस्तक या किसी दूसरे स्टडी मटेरियल पर खर्च नहीं करना पड़ता है।
३. बढ़ती जनसंख्या के कारण ई-शिक्षा संस्थानों का विकल्प बन सकती है।
४. ई-शिक्षा पर्यावरण की दृष्टि से भी लाभदायक है, जिसमें किताबों के बजाय वेब आधारित ऐप व पोर्टल पर पठन-पाठन कर सकते है।
५. ई-शिक्षा, इंटरनेट और कम्प्यूटर कौशल का ज्ञान विकसित करती है जिससे विद्यार्थियों को अपने जीवन और कैरियर के क्षेत्र में आगे बढ़ने में मदद मिलेगी।

ऑनलाइन शिक्षा पद्धति में सरकारी प्रयास :-

ई-शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार कई प्रयास कर रही है इसी क्रम में स्टडी वेब ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एसपाइरिंग माइंडस`जनकल ूमइ वॅ बजपअम समंतदपदह वित लवनदहॅेचपतपदह उपदकेद्ध यानि स्वयं ";।ल।डद्ध की शुरूआत की गई है। दरअसल यह एकीकृत मंच है जो वर्ग ९ से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक ऑनलाइन पाठ्यक्रम मुहैया कराता है। डीटूएच के जरिए २४x७ आधार पर देश में सभी शैक्षिक चैनल प्रदान करने के लिए स्वयं प्रभा नामक पहल की शुरूआत की गई, स्वयं प्रभा ३२ उच्च गुणवत्ता वाले चैनलों का एक समूह है। जिसमें पाठ्यक्रम आधारित सामग्री होती है जो विविध विषयों को कवर करती है इसके अलावा नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया एक पहल है इसका उद्देश्य सिंगल-विंडो सर्च सुविधा के तहत सीखने के संसाधनों के वर्चुअल भंडार का ढांचा विकसित करना है इसी तरह ई-यंत्र और ई-पाठशाला जैसी परियोजाएं भी ऑनलाइन शिक्षा को प्रोत्साहित कर रहीं हैं। डिजिटल शिक्षा के लिए उपलब्ध

प्लेटफॉर्म को बढ़ावा देने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा "भारत पढ़े" ऑनलाइन कार्यक्रम की शुरूआत की गई है। साथ ही सरकार ई-शिक्षा को बढावा देने के लिए विभिन्न ई-लर्निंग कार्यक्रमों का समर्थन कर रही है।

ऑनलाइन शिक्षण पद्धति में आने वाली चुनौतियाँ :-

- खराब इंटरनेट कनेक्टेविटी इस क्षेत्र में सबसे बड़ी चुनौती है इससे भी बड़ी बात है कि इंटरनेट तक १०० फीसदी लोगों की पहुँच सुनिश्चित नहीं हो सकी है इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अनुसार मार्च २०१९ तक ३५ प्रतिशत लोग ही इंटरनेट का इस्तेमाल कर पा रहे है।
- देश में अमीरों और गरीबों के बीच विकराल डिजिटल विभाजन है।
- वर्चुअल क्लास रूम में प्रैक्टिटल या लैब वर्क करना भी मुश्किल है।
- शिक्षाकों और छात्रों के बीच संवादहीनता की स्थिति बनने की संभावना रहती है।
- छात्रों में अकेलेपन के कारण उनके अवसाद से पीड़ित होने की आशंका हो जाती है।
- बिजली आपूर्ति जैसी बुनियादी अवसंरचना बेहतर नहीं है।

निष्कर्ष:-

अत: निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि कोरोना संक्रमण के कारण उच्च शिक्षा में अभिनव तकनीक की उपयोगिता बढ़ती जा रही हैं। और इस नई शिक्षण पद्धति को प्रभावी बनाने के लिए सरकार, उच्च शिक्षण संस्थान, शिक्षाकों तथा विद्यार्थियों का सहयोग बेहद आवश्यक है साथ ही यह भी जरुरी है कि इन तकनीकों का इस्तेतमाल सही तरीके से किया जाए तो विषय वस्तु और शैक्षणिक प्रविधि दोनों में बुनियादी बदलाव किए जा सकते है और शिक्षण ज्ञान और दक्षाता के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है जो आजीवन अध्ययन के लिए छात्रों को प्रेरित करता रहेगा। ये तकनीक छात्रों, शिक्षाकों और विशेषज्ञों के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा देता है साथ ही सीखने वालो को मौका देता है कि वे विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के साथ काम करना सीख सके जिससे उनकी संचार और समूह की क्षमता में संवर्धन होता है तथा दुनिया के बारे में जागरुकता बढ़ती है यह आजीवन सीखने का मॉडल है जो सीखने के दायरे को बढ़ाता है।

मानव संसाधन मंत्रालय ने सशक्त नामक बेब पोर्टल भी प्रारंभ किया जो 'वन स्टॉप शिक्षा पोर्टल' है। उच्च गुणवत्ता वाली ई-विषय वस्तुत सभी विषय क्षेत्रों और विषयों पर "सशक्त" में अपलोड की जायेगी। उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन का भी यही उद्देश्य है कि विद्यार्थी के व्यक्तित्व का बहुआयामी विकास सुनिश्चित करते हुए उसे लक्ष्य तक पहुंचने हेतु काबिल बनाना तथा उसके अंतर्मन में मानवीय गुणों को विकसित करना। साथ ही शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत युवा शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक रुप से सशक्त हो, उर्जावान हो, इसके साथ ही इन युवाओं में सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, प्रतिबद्धता, मूल्यबोध एवं संस्कार विकसित हो और वे संवेदनशील हो ताकि ये युवा अध्ययनोपरांत जब समाज में जाये तब अपना श्रेष्ठतम योगदान देते हुए मानवता की सेवा कर सकें।

सुझाव:-

- उच्च शिक्षा में प्रयोग में लाई जा रही अभिनव तकनीक की जानकारी सभी विद्यार्थियों तथा शिक्षाको की दी जाए।
- नए-नए एप्स का उपयोग कैसे किया जाये, इसकी जानकारी छोटे-छोटे वेबीनार या कार्यशाला के द्वारा दी जाए।
- बदलते परिदृश्य में नई-नई तकनीक का प्रयोग करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए।
- ऑफलाइन शिक्षा के साथ ऑनलाइन शिक्षा को भी शामिल किया जाए।
- सरकारी अभियानों को व्यवस्थित ढंग से क्रियान्वित करने की जरूरत है।

संदर्भ सूची :-

१. अखिल भारतीय तकनीक शिक्षा परिषद् ;।प्ब्ज्द्ध
2- Google Search
3- https://www.vou.ac.in
4- https://www.tejasviastitiwa.com
5- Dainik Bhaskar Newspaper
६. उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन।
7- www.Dristiias.com
8- NEP (New Edication Policy) - 2020